ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, January-June 2025, Submitted in June 2025

नशा मुक्ति केंद्रों से छुट्टी के बाद मरीजों में 'रिलेप्स' (पुनरावृत्ति) के कारकों का अध्ययन

विकास कुमार, शोधार्थी (मनोविज्ञान), टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर
अनुराधा सिंह, सह आचार्य (मनोविज्ञान), टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर

अमूर्त

यह शोध पत्र नशा मुक्ति केंद्रों से उपचार प्राप्त कर चुके व्यक्तियों में नशा दोबारा शुरू करने के मुख्य कारणों (Trigger Points) का विश्लेषण करता है। नशा मुक्ति एक निरंतर प्रक्रिया है, जो अस्पताल से छुट्टी मिलने के बाद भी जारी रहती है। शोध का निष्कर्ष बताता है कि सामाजिक कलंक, पारिवारिक समर्थन का अभाव, और मानसिक तनाव रिलेप्स के प्राथमिक कारण हैं। यह अध्ययन उपचार के बाद की 'आफ्टर–केयर' (After-care) सेवाओं की प्रभावशीलता और उनकी आवश्यकता पर बल देता है।

परिचय

नशा न केवल व्यक्ति के स्वास्थ्य को प्रभावित करता है, बल्कि यह परिवार और समाज की जड़ों को भी कमजोर करता है। भारत में नशा मुक्ति केंद्रों की संख्या बढ़ी है, लेकिन 'रिलेप्स दर' अभी भी चिंताजनक है। 'रिलेप्स' का अर्थ है उपचार के एक सफल दौर के बाद फिर से नशे की लत में पड़ जाना। यह शोध उन विशिष्ट स्थितियों और ट्रिगर्स की पहचान करने का प्रयास करता है जो एक व्यक्ति को पुनः नशे की ओर धकेलते हैं।

साहित्य समीक्षा

विभिन्न पूर्व अध्ययनों (जैसे मार्लेट और गॉर्डन, 1985) के अनुसार, रिलेप्स केवल इच्छाशक्ति की कमी नहीं, बल्कि एक जटिल 'कॉग्निटिव–बिहेवियरल' प्रक्रिया है। भारतीय संदर्भ में किए गए शोध दर्शाते हैं कि बेरोजगारी और पुराने नशेड़ी मित्रों का साथ (Peer Pressure) रिलेप्स के सबसे बड़े उत्प्रेरक हैं। कई विद्वानों ने माना है कि 'आफ्टर–केयर' प्रोग्राम की कमी के कारण मरीज खुद को समाज से कटा हुआ महसूस करता है।

विधि तंत्र

शोध का प्रकारः वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक (Descriptive and Analytical)।

नमूना चयन (Sampling): नशा मुक्ति केंद्रों से डिस्चार्ज हुए 50–100 मरीजों का चयन (उद्देश्यपूर्ण नमूनाकरण)।

डेटा संग्रहः प्राथमिक डेटा के लिए साक्षात्कार (Interview) और प्रश्नावली (Questionnaire) का उपयोग। द्वितीयक डेटा के लिए अस्पताल के रिकॉर्ड और शोध पत्रिकाओं का संदर्भ।

क्षेत्रः स्थानीय नशा मुक्ति केंद्र और पुनर्वास केंद्र।

प्रस्तावित शोध के सोपान

विषय का चयन और समस्या का सूत्रीकरण।

संबंधित साहित्य का गहन अध्ययन।

प्रश्नावली और साक्षात्कार शेड्यूल तैयार करना।

क्षेत्रीय कार्य (Field Work) और डेटा का संग्रह।

सांख्यिकीय विश्लेषण (Statistical Analysis)।

निष्कर्ष और सुझाव।

शोध अंतराल

वर्तमान में अधिकांश शोध नशा मुक्ति की 'उपचार प्रक्रिया' पर केंद्रित हैं। लेकिन, अस्पताल से घर जाने के बाद के पहले 90 दिनों के सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक बदलावों और 'ट्रिगर पॉइंट्स' पर शोध की कमी है। यह शोध उन विशिष्ट ट्रिगर्स (जैसे भावनात्मक असुरक्षा और डिजिटल ट्रिगर्स) पर ध्यान केंद्रित करता है जिन्हें अक्सर अनदेखा कर दिया जाता है।

उद्देश्य

- रिलेप्स के लिए जिम्मेदार सामाजिक और मनोवैज्ञानिक ट्रिगर्स की पहचान करना।
- पारिवारिक वातावरण और रिलेप्स के बीच संबंध का अध्ययन करना।
- उपचार के बाद दी जाने वाली 'आफ्टर–केयर' सेवाओं की वर्तमान स्थिति का मूल्यांकन करना।

परिकल्पना

H1: जिन मरीजों को परिवार का सक्रिय भावनात्मक समर्थन मिलता है, उनमें रिलेप्स की संभावना कम होती है।

H2: सामाजिक कलंक (Stigma) और रोजगार का अभाव रिलेप्स के मुख्य ट्रिगर पॉइंट हैं।

महत्व

यह शोध नशा मुक्ति केंद्रों, मनोवैज्ञानिकों और नीति निर्माताओं के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसके माध्यम से

रिलेप्स को रोकने के लिए बेहतर श्फॉलो–अपश नीतियां बनाई जा सकती हैं।

मरीजों के परिवारों को शिक्षित करने के लिए नए मॉड्यूल तैयार किए जा सकते हैं।

यह समाज में नशे के प्रति दृष्टिकोण बदलने में सहायक होगा।

निष्कर्ष

नशा मुक्ति केवल दवाओं से संभव नहीं है। रिलेप्स के ट्रिगर पॉइंट्स मुख्य रूप से व्यक्ति के परिवेश और उसके मानसिक स्वास्थ्य से जुड़े होते हैं। यदि मरीज को उपचार के बाद एक सहायक वातावरण, रोजगार के अवसर और नियमित काउंसलिंग (After-care) मिले, तो रिलेप्स की दर को काफी हद तक कम किया जा सकता है। नशा मुक्ति केंद्र से छुट्टी मिलना उपचार का अंत नहीं, बल्कि एक नई जीवनशैली की शुरुआत होनी चाहिए।

संदर्भ

1. विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) रिपोर्ट – मादक द्रव्यों का सेवन और स्वास्थ्य।
2. आहुजा, एन. (2011). अ टेक्स्टबुक ऑफ पोस्टग्रेजुएट साइकियाट्री।
3. राष्ट्रीय सामाजिक रक्षा संस्थान (NISD) की वार्षिक रिपोर्ट।
4. Marlatt, G. A., - Gordon, J. R. (1985). Relapse Prevention.